International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 693-695

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(10): 693-695
www.allresearchjournal.com
Received: 28-08-2020
Accepted: 29-09-2020

डॉ. उपमा सिन्हा
पी-ए च. डी (दर्शनशास्त्र)
दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविधालय, पटना, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. उपमा सिन्हा
पी-ए च. डी (दर्शनशास्त्र)
दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविधालय, पटना, बिहार, भारत

नैतिकता एवं कारपोरेट वर्ल्ड : एक विवेचन

डॉ. उपमा सिन्हा

सारांश
प्रस्तुत शोधपत्र में नैतिकता एवं कारपोरेट वर्ल्ड' का विवेचन किया गया है। वैश्वीकरण के इस दौर में जबकि सूचना और संचार क्रांति ने सबकुछ बदल कर रख दिया है। पूरा समाज बाजार में तब्दील हो चुका है। उपभोक्तावाद हावी है, ऐसे में नैतिकता की चिंता महत्वपूर्ण है। नैतिकता एवं कारपोरेट जगत का अन्योन्याश्रय सम्बंध है। नैतिकता, कारपोरेट जगत के सामने एक प्रतिमान प्रस्तुत करती है तथा एक 'वॉय डॉग' की भांति उसकी प्रत्येक गतिविधियों का सूक्ष्मता से अवलोकन करती है। नैतिकता उन्हें 'वेवड्र्स' होने से रोकती है तथा अपने आदर्शों एवं कार्यक्रमों से भटकने वाले उद्योग समूहों को वापस पटरी पर लाने में महत्वपूर्ण योगदान करती है।

प्रस्तावनाः
जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिक मूल्यों की उपादेयता निर्विवाद रूप से प्रमाणित हो चुकी है। नैतिक मूल्यों की उपेक्षाकर कोई भी समाज या संस्थान अपेक्षित सफलता अर्जित करने में सफल नहीं हो सकता। जहां तक कारपोरेट वर्ल्ड और नैतिकता के परस्पर रिश्तों का प्रश्न है, तो उनके बीच चोली-दामन का संबंध रहा है। नैतिकता का संबंध नीतिशास्त्र से है। नीतिशास्त्र अंग्रेजी शब्द Ethics का हिंदी रूपान्तरण है। Ethics ग्रीक शब्द Ethica से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है—आचरण, रीति-रिवाज। दूसरी ओर 'Morality' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द 'Mores' से हुई है, जिसका अर्थ भी रीति-रिवाज, प्रचलन एवं आदत होता है। नतिशास्त्र वह शास्त्र है जो हमारे व्वहार को नियंत्रित करता है और यह मापदंड प्रस्तुत करता है कि कौन सा आचरण हमारे लिए उचित है और कौन सा अनुचित। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कारपोरेट वर्ल्ड ने समाज की दिशा एवं दशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। समाज के व्यापक हित में इसकी उपलब्धियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

वस्तुतः इंग्लैण्ड में हुई औद्योगिक क्रांति ने एक नवीन युग-बोध की आधारशिला रखी, जिसने मध्यकालीन चिंतन-पद्धति की सीमाओं की ओर स्पष्ट रूप से रेखांकित कर पूंजीवादी व्यवस्था के प्रति अपनी गहरी आस्था व्यक्त की। इस व्यवस्था ने विकास के नवीन आयामों का सृजन किया तथा भौतिक उन्नति को व्यक्ति के जीवन का अभिष्ट घोषित कर सामाजिक संरचना में व्यापक फेरबदल कर दिये। इसने व्यक्ति और समाज की नई प्राथमिकताएं निर्धारित कर दी तथा उन्हें हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश भी दिए। व्यक्ति के इस बदले हुए सोच की झलक उस काल के महान दार्शनिक बैन्थम[1]एवं मिल[2] की रचनों में प्राप्त होती है, जिन्होंने क्रमशः Utilitarianism एवं

Hedonism सरीखे सिद्धांतों का प्रतिपादन कर नवीन जीवन-दर्शन से विश्व-समुदाय का साक्षात्कार कराया। उनके सिद्धांतों को पूंजीवादी व्यवस्था का घोषणापत्र कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने बिल्कुल व्यवहारिक दृष्टिकोण का परिचय देते हुए तत्कालीन सामाजिक संरचना एवं चिन्तन-पद्धति की कलई खोल कर रख दी तथा इस नवीन युग-धर्म एवं उसके फलितार्थ से लोगों को आगाह किया। औद्योगिक क्रांति में आर्थिक विकास के एकाधिक अवसर तो मुहैया कराए ही उद्योग-समूहों के बीच श्रेष्ठता हासिल करने के लिए प्रतिस्पर्धा भी आरंभ कर दी। दौड़ में बने रहने के लिए नैतिक मूल्यों की भी घोर उपेक्षा की गई।

भारत में कारपोरेट जगत का अभ्युदय एक पवित्र उद्देश्य की सिद्धि के लिए हुआ. स्वदेशीकरण के दौर में इंग्लैण्ड के उद्योगों की दुरभिसंधियों एवं कुचक्रों के विरुद्ध हुए व्यापक जनाक्रोश ने स्वदेशी उद्योगों को इनके विकल्प के रूप में खड़ा होने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रख्यात चिन्तक दादाभाई नौरोजी ने आर्थिक असमानता एवं भारतीय संसाधनों के अंग्रेजों द्वारा दोहन किए जाने पर तीखों प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इनकी आर्थिक नीतियों की कड़े शब्दों में निन्दा की। उन्होंने इस उपेक्षापूर्ण व्यवस्था के प्रति अपनी घोर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि गंगा के मुहाने से जमा की गई पूंजी का संचय टेम्स में किया जा रहा है।[3] मसलन भारतीय संसाधिनों के दोहन की कीमत पर ब्रिटिश उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने भारतीय उद्योगों एवं पूंजीपतियों का आह्वान किया कि इस आर्थिक शोषण पर अंकुश लगाने के लिए एक समानान्तर औद्योगिक इकाई विकसित करें।[4] देशी उद्योगों ने इस चुनौती को गंभीरता से लिया तथा एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था की नींव रखने का संकल्प लेकर सामने आए। तब से देशी उद्योगों ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। विकास की गंगा की वेगवती धारा ने समस्त भूमंडल को अपने आगोश में समाहित कर लिया। आज वैश्वीकरण के दौर में भारतीय उद्योगों की विश्व के मानचित्र पर काफी अच्छी पहचान बन गई है। अंबानी बंधु, लक्ष्मी मित्तल, रतन टाटा, इंदिरा नूई आदि से नाम है जिन्होंने भारतीय उद्योगों को नई पहचान दी है, उसे गौरवान्वित किया है। रतन टाटा ने आम आदमी की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पूर्व में की गई अपनी घोषणा पर कायम रहते हुए .श्म्गच्व 2008 के दौरान लखटकिया कार 'नैनो' पेश करके उद्योग जगत में धूम मचा दी थी। विश्व की सबसे सस्ती कार की चमक अमेरिका एवं यूरोप के देशों में भी महसूस की गई। स्टील विजार्ड मित्तल एवं टाटा ने कोरस एवं आर्सेनल जैसी नामी गिरामी कम्पनियों का स्वामित्व हासिल कर भारतीय उद्योग को सफलता की बुलंदियों पर ला खड़ा किया।

यह देखा गया है कि इस क्रम में कही चूक भी हुई तथा भारतीय उद्योगों के व्यापक हित को ध्यान में रखते हुए इनकी पुनरावृत्ति से बचना अपेक्षित होगा। 'नैनो' के उत्पादन के लिए पश्चिम बंगाल के सिंगूर स्थित 'सेज' के अधिग्रहण को लेकर उठा विवाद कारपोरेट जगत की नैतिक मूल्यों में आस्था को लेकर शंकाएं पैदा करता है तथा उसे कठघरे में भी खड़ा करता है । हालाकि उच्च न्यायालय के go ahead signal से टाटा उद्योग को थोड़ी राहत अवश्य मिली है। लेकिन राज्य सरकार द्वारा नियमों एवं मूल्यों को ताक पर रखकर कारपोरेट जगत को अनपेक्षित लाभ देने के निर्णय के पश्चात् सिंगूर एवं नंदिग्राम में भड़की हिंसा स्थानीय सरकार एवं कारपोरेट जगत की नीयत के प्रति संदेह पैदा करती है। इससे कहीं न कहीं इनका दामन तो दागदार होता ही है। क्षणिक आर्थिक लाभ के लिए जनता के हितों की उपेक्षा कर किसी भी सौदे को मंजूरी देना नैतिकता की स्वस्थ्य मान्यताओं का खुला उल्लंघन है। उद्योगों को प्रोत्साहन देना या विकास कार्यों को निर्बाध रूप से सम्पन्न करने के लिए पूंजीनिवेश के लिए पहल निश्चित रूप से स्वागत योग्य कदम है। इस निर्णय से किसी को कोई असहमति नहीं हो सकती है। वैश्वीकरण के दौर में यह समय की मांग बन गई है। परन्तु ऐसे किसी भी मुद्दे पर अंतिम निर्णय लेने से पूर्व संबद्ध पक्षों के बीच व्यापक सहमति कायम होना आवश्यक है। किसी एक पक्ष के हितों को अनदेखा कर एकतरफा निर्णय लेने के दुरगामी परिणाम हो सकते हैं, जो कारपोरेट जगत की दिशा एवं दशा तय करने में निर्णायक भूमिका अदा कर सकते हैं। इन सारे प्रकरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कारपोरेट जगत में नैतिक मूल्यों के प्रति आकर्षण घूमिल पड़ रहा है। कारपोरेट जगत का अपने उद्देश्य, सीमाओं एवं प्रतिबद्धताओं के प्रति गंभीर होना आवश्यक है। अपने हितों के साथ-साथ आम आदमी के हितों को भी उन्हें अपनी कार्य-सूची में सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। नैतिक मूल्यों के प्रति दृढ़ता पूर्वक कायम रहकर ही ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सकती है।

भारतीय उद्योगों की सबसे बड़ी विशेषता है चुनौतियों का दृढ़तापूर्वक सामना करना तथा उनके विरुद्ध मजबूती से खड़ा रहना। भारतीय उद्योग ने अपने शैशवावस्था में अपनी कर्मठता एवं दृढ़ प्रतिज्ञता से ईस्ट इंडिया कंपनी जैसी मजबूत शक्ति को नाकों चेने चबाने पर मजबूर कर दिया था। इनके प्रयासों से भारतीय पूंजी एवं प्रतिभा दोनों के पलायन पर अंकुश लगाने में प्रभूत सफलता प्राप्त हुई। इसका प्रमुख कारण था कारपोरेट जगत का जन सेवा

के प्रति निष्ठावान होना। उनके लिए राष्ट्र के प्रति अनुराग सर्वोपरि था। उनके प्रत्येक निर्णय उनके इन आदर्शों पर आधारित होते थे। यही कारण है कि जे.आर.डी. टाटा एवं धनश्याम दास बिड़ला सरीखे उद्योगपतियों की देश के लिए की गई सेवा को स्वतंत्रता संग्राम की अग्रिम पंक्ति में शामिल राष्ट्रनायकों की सेवाओं से कहीं से भी कम कर के नहीं आंका जा सकता। भारत के मान एवं सम्मान की रक्षा के लिए उनके द्वारा की गई पहल को अनदेखा नहीं किया जा सकता। उसी प्रकार आर्थिक सुधार की प्रक्रिया के अन्तर्गत 90 के दशक में भारतीय बाजार में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा दस्तक दिए जाने के कारण यह आशंका व्यक्त की जा रही थी कि अपनी गुणवत्ता, पूंजी एवं मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर के कारण वे भारतीय कंपनियों पर भारी पड़ेगी तथा अपने अस्तित्व के लिए देशी कंपनियों को काफी जद्दोजहद करनी पड़ेगी, पसीना बहाना पड़ेगा। भारतीय उद्योग जगत् ने इस चुनौती का सहजता से सामना किया और धीरे-धीरे न सिर्फ भारतीय बाजार में उन्होंने अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई वरन् विदेशों में भी अपनी सफलता के परचम लहराये। अनिल अंबानी की कंपनी के निवेशकों ने हाथों हाथ लेकर भारतीय उद्योग जगत् की गतिशीलता एवं उसकी महार्धता पर मुहर लगा दी है। कारपोरेट जगत की उल्लेखनीय सफलताओं ने निश्चित रूप से देश का सर ऊंचा किया है। आधी शताब्दी में कारपोरेट जगत ने जो उपलब्धियाँ हासिल की हैं उससे प्रत्येक भारतवासी गर्व से सर उठा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि कारपोरेट जगत् आम आदमी की आवश्यकताओं एवं नैतिक मूल्यों की कसौटी पर अपनी नीतयों का मूल्यांकन करें तथा जे.आर.डी. टाटा एवं धनश्याम दास बिड़ला के आदर्शों को मूलमंत्र मानकर उन पर सख्ती से अमल करें। भारतीय उद्योगों की प्रतिबद्धताओं एवं कर्मण्यता से किसी को एतराज नहीं हो सकता। जिस प्रकार नारायण मूर्ति सरीखे शलका पुरुषों ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए नवीन आदर्शों का सृजन कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया उन आदर्शों को नयी ओजस्विता प्रदान करना कारपोरेट जगत के लिए एक चुनौती है।

निष्कर्षतःइस प्रकार हम कह सकते हैं कि नैतिकता एवं कारपोरेट जगत् का अन्योन्याश्रय संबंध है। नैतिकता कारपोरेट जगत् के सामने एक प्रतिमान (स्टैन्डर्ड) प्रस्तुत करती है तथा एक Watch dog की भांति उसकी प्रत्येक गतिविधियों का सूक्ष्मता से अवलोकन करती है। नैतिकता उन्हें Way wards होने से रोकती है तथा अपने आदर्शों एवं कार्यक्रमों से भटकने वाले उद्योग समूहों को वापस पटरी पर लाने में महत्वपूर्ण योगदान करती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. Bentham, Jeremy: Introduction to the principles of Morals and Legislation, London, 1789
2. Autobiography of J.S. Mill, Fortnightly Review, 1873.
3. Naoroji, Dadabhai: Poverty and Un-British Rule in India, Publications Division, Ministry of I & B, Government of India. Commonwealth publications, 1988
4. Ibid.